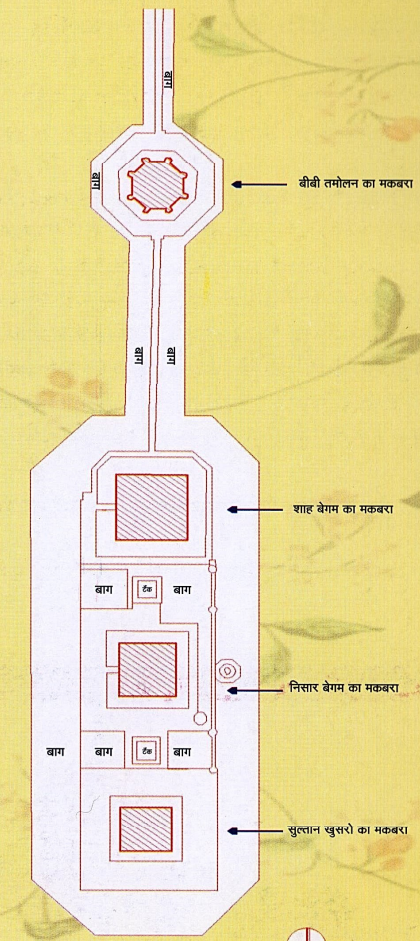

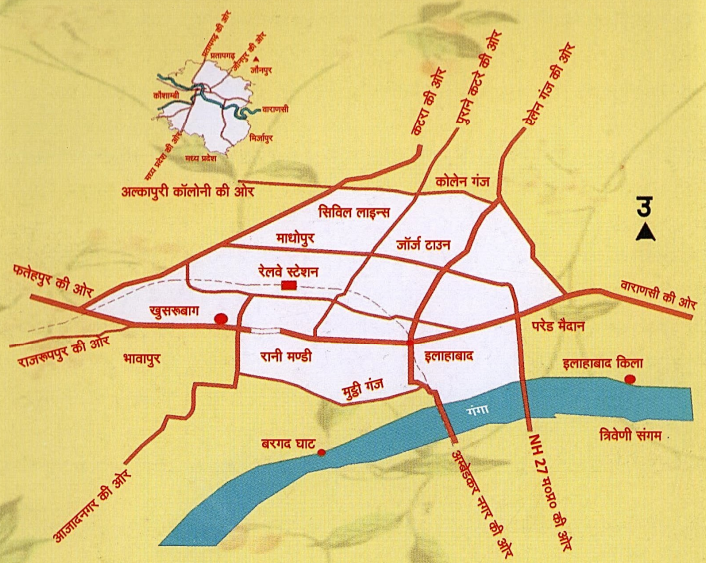

भ्रमण का समय

स्मारक प्रतिदिन सूर्योदय से सूर्यास्त तक खुला रहता है।

प्रवेश निःशुल्क

संपादक : डा. एन. के. सिन्हा
पाठ संकलन : श्री अब्दुल आरिफ
श्री अनिल कुमार सिंह
छायाचित्र : श्री ओ. पी. पाण्डेय
मानचित्र : श्री राम नरेश यादव

अधीक्षण पुरातत्त्वविद्
भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण,
सारनाथ मंडल, सारनाथ, वाराणसी,
उ० प्र०, २२१००७
फोन नं० ०५४२-२५९५००७, २५९५२०७
Email : circlesar.asi@gmail.com
Website : www.asisarnathcircle.org

© भा० पु० सर्वे० २०१८

सत्यमेव जयते
प्रत्नकीर्तिमपावृणु

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

खुसरो बाग

अधीक्षण पुरातत्वविद्
भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण
सारनाथ मण्डल, सारनाथ
वाराणसी, उ० प्र०

इलाहाबाद अथवा प्रयागराज (अक्षांश २५° २६' ३२.२७'' उत्तर, देशांतर ८१° ४९' १५.७६'' पूर्व) उत्तर प्रदेश का एक प्राचीन शहर है, जिसे पूर्व में प्रयाग के नाम से जाना जाता था। यह लखनऊ से २०५ कि०मी० दक्षिण पूर्व में स्थित है। तीन पवित्र नदियों - गंगा, यमुना एवं सरस्वती (विलुप्त) के तट पर अवस्थित यह स्थल सड़क, रेल एवं हवाई मार्ग से भली-भाँति जुड़ा है। ऐसी मान्यता है कि ब्रहमांड के निर्माता ब्रह्मा ने पृथ्वी पर प्रयाग में बलि अनुष्ठान में भाग लिया था। रामायण काल में भगवान राम ने भारद्वाज आश्रम 'प्रयाग' में कुछ समय बिताया था। महाभारत युग में कुरु शासकों ने हस्तिनापुर को अपनी राजधानी बनाया था तथा उत्तर वैदिक काल में जब हस्तिनापुर बाढ़ से नष्ट हो गया था, तब कुरु राजा निचक्षु ने अपनी राजधानी हस्तिनापुर से प्रयाग स्थातंरित की और इसे कौशांबी नाम दिया था। ६४३ ई० में चीनी बौद्ध यात्री ह्वेनसांग ने प्रयाग की यात्रा की थी। कालान्तर में प्रयाग कई साम्राज्यों एवं राजवंशों द्वारा नियत्रिंत किया गया। १५७५ ई० में मुगल सम्राट अकबर ने संगम के पवित्र तट पर एक किला बनवाया और इसे इल्हाबाद नाम दिया जो बाद में इलाहाबाद बन गया। राजकुमार सलीम ने इलाहाबाद से ही अपने पिता अकबर के खिलाफ विद्रोह का नेतृत्व किया था। १६०५ ई० में अकबर की मृत्यु के पश्चात उसके पुत्र सलीम ने जहांगीर के नाम से सम्राट पद ग्रहण किया। जहांगीर उद्यानों का बहुत बड़ा प्रेमी था। अपने इलाहाबाद प्रवास (१५९९-१६०५ई०) के दौरान राजकुमार सलीम ने सैरगाह के लिए खुसरो बाग का निर्माण कराया था। खुसरो बाग में चार केन्द्रीय संरक्षित स्मारक है, जिन्हें शाह बेगम का मकबरा, खुसरो का मकबरा, निसार बेगम का मकबरा, बीबी तमोलन का मकबरा के नाम से जाना जाता है।

शाह बेगम का मकबरा - जहाँगीर के समय में यहाँ कई महत्वपूर्ण इमारतों का निर्माण हुआ, जिसमें उनकी पहली पत्नी मानबाई का मकबरा प्रमुख है। जहाँगीर ने अपने पुत्र खुसरो के जन्म के पश्चात् मानबाई को शाह बेगम की उपाधि दी थी। इसी कारण इस मकबरे का नाम शाह बेगम का मकबरा है। मानबाई आमेर के राजा भगवंत दास, जो उस समय पंजाब के गवर्नर थे, की पुत्री थीं और राजपूत राजा मानसिंह की बहन थीं। १५८४ ई. में उनका विवाह सलीम के साथ हुआ और १५८७ ई. में उन्होंने खुसरो को जन्म दिया। सलीम, मुगल शासक जहाँगीर के बचपन का नाम था। शाहबेगम ने १६०३ ई. में इलाहाबाद में अफीम की अत्यधिक मात्रा में सेवन करके आत्महत्या कर ली थी। वह पिता और पुत्र के बीच कड़वाहट को लेकर बहुत चिंतित और दुःखी थीं। उनकी कब्र इस बाग में निर्मित है, जिसे बाद में खुसरो बाग के नाम से जाना जाने लगा। इस मकबरे का नक्शा जहाँगीर के सबसे प्रमुख कलाकार अक्का रज़ा ने १६०६ से १६०७ ई. के बीच तैयार किया था। यह एक तीन मंजिला इमारत है। इसकी छत स्तम्भों पर खड़ी है, जिसके ऊपर एक बड़ी छतरी है। इसके ठीक नीचे शाहबेगम की कब्र स्थित है। मकबरे पर उत्कीर्ण अभिलेख जहाँगीर के प्रसिद्ध लेखाकार मीर अब्दुल मुस्कीन कलाम द्वारा बेल-बूटों जैसे दिखने वाले अरबी लेख से सजा है।

खुसरो का मकबरा - खुसरो (१५८७-१६२२) जहाँगीर और शाह बेगम का बड़ा बेटा था। खुसरो सुशिक्षित और अपने शिष्ट व्यवहार एवं निर्विवाद व्यक्तित्व के कारण जनता में लोकप्रिय था। १६०५ ई. में अकबर बुरी तरह से बीमार पड़े तब खुसरो के साथियों ने उनके ससुर मिर्जा अजीज कोका और उनके मामा आमेर के राजा मान सिंह के नेतृत्व में खुसरो को गद्दी पर बिठाने का भरपूर प्रयास किया। परन्तु अकबर ने अपने अन्तिम समय में सलीम को गद्दी पर नियुक्त किया और सलीम को जहाँगीर की पदवी से नवाजा। जहाँगीर के गद्दी पर बैठने के कुछ महीने बाद खुसरो ने विद्रोह कर दिया। परन्तु वह जहाँगीर द्वारा परास्त कर दिया गया। उसे गिरफ्तार कर अन्धा कर दिया गया। अपने भाई खुर्रम (जिन्हें बाद में शाहजहाँ के नाम से जाना गया) की देखरेख में बन्दी रहते हुये ही १६२२ ई. में उनकी मृत्यु हो गयी। उन्हें खुसरो बाग में ही उनकी माँ के मकबरे के बगल में दफनाया गया। खुसरो का मकबरा उनकी बहन सुल्तान निसार बेगम ने बनवाया था। मेहराबदार दीवारों वाली यह इमारत अष्टकोणीय आकार की संरचना पर बने स्तम्भों पर टिके विशाल गुम्बद से ढकी है, जिसके कोनों पर छोटी छतरियाँ बनी हैं। इस कक्ष के भीतरी हिस्से पुष्प और सनोवर के वृक्षों की डिजाइन से सजे हैं। गुम्बद पर वृत्त और तारों का ज्यामितिय शैली में चित्रण किया गया है जो एतमाद्-उद्-दौला के मकबरे में बनी शैली से काफी समानता रखता है।

निसार बेगम का मकबरा - निसार बेगम खुसरो की बहन थी। निसार बेगम का मकबरा शाहबेगम के मकबरे के समीप स्थित है। इस मकबरे का निर्माण १६२४-२५ में स्वयं उन्हीं के द्वारा खुसरो के मकबरे के निर्माण के समय ही किया गया था । यह मकबरा कभी भी समाधि के रूप में प्रयोग नहीं किया गया। इस मकबरे की वास्तु संरचना बहुत ही प्रभावशाली है। यह मकबरा एक ऊंचे चबूतरे पर बना है।

बीबी तमोलन का मकबरा - यहाँ स्थित चतुर्थ मकबरा तमोलन बीबी का है, जो परिसर के पश्चिमी भाग में स्थित है। इस मकबरे में किसी प्रकार का लेख अंकित नहीं है। एक मान्यता है कि यह मकबरा फतेहपुर सीकरी के इस्ताम्बुल बेगम से सम्बन्धित था। खुसरो की किसी बहन ने अपने लिए यह मकबरा बनवाया था, परन्तु उनको वहाँ नहीं दफनाया गया था।

शाह बेगम का मकबरा

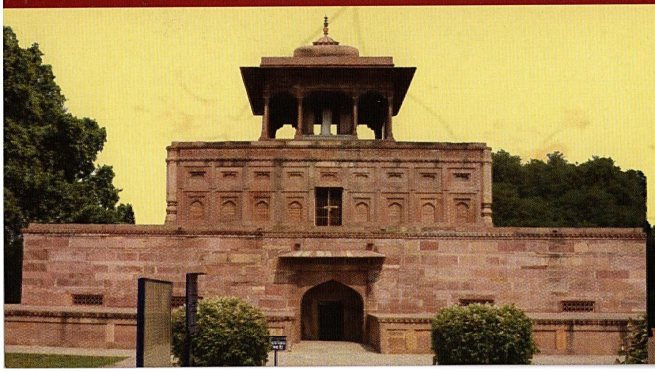

खुसरो का मकबरा

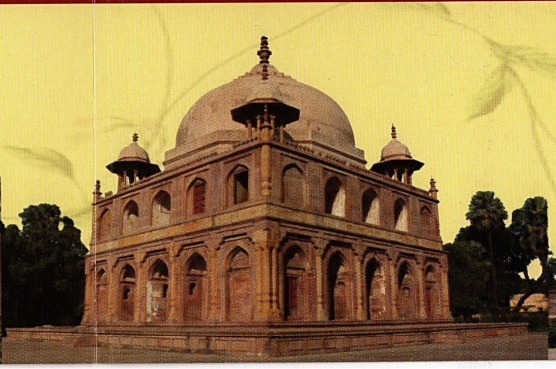

निसार बेगम का मकबरा

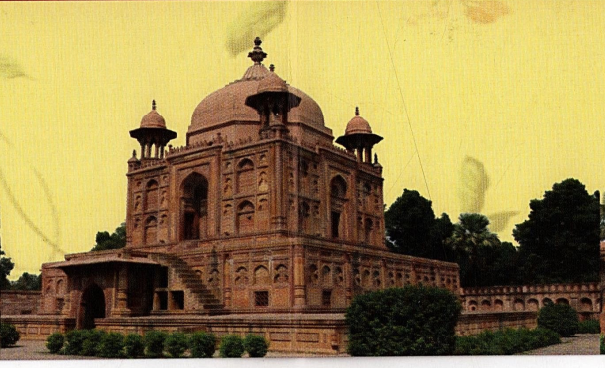

बीबी तमोलन का मकबरा